RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारत – अफगानिस्तान के ऐतिहासिक संबंध : एक अध्ययन

सरोज स्वामी

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

अफगानिस्तान इस्लामी गणराज्य दक्षिण एशिया में अवस्थित देश है, जो विश्व का एक भू – आवेस्थित देश है। अफगानिस्तान के पूर्व में पाकिस्तान, उत्तर पूर्व में भारत तथा चीन, उत्तर में ताजिकिस्तान, कजाकस्तान तथा तुर्कमेनिस्तान तथा पश्चिम में ईरान है। मध्य एशिया के देशो में पहुंचने के लिये अफगानिस्तान एक महत्वपूर्ण देश है। अफगानिस्तान भारत का एक परम्परागत मित्र रहा है। भारत – अफगानिस्तान रिश्तों की कहानी सिन्धु घाटी सभ्यता के समय से जुड़ी हुई है। सिकन्दर के छोटे से समय के कब्जे के बाद सेलुसिड साम्राज्य ने आज के दिन जाने जाने वाले अफगानिस्तान पर शासन किया। मौर्य साम्राज्य ने यहां बौद्ध धर्म स्थापित किया और हिन्दु कुश से दक्षिण तक के इलाके को नियंत्रित किया। मौर्य साम्राज्य की गिरावट महाराजा अशोक की मृत्यु के 60 सालों के अन्दर दिखने लगी और इस क्षैत्र पर विभिन्न साम्राज्यो ने समय समय पर आक्रमण किया। 7 वीं सदीं मे अफगानिस्तान में इस्लाम के आगमन से पहले इस इलाके ने बुद्ध, हिन्दु और फारसी धर्मो को देखा। 10 वीं से लेकर 18 वीं सदी तक फिर यहाँ आक्रमणकत्ताओं के द्वारा इस इलाके पर नियंत्रण के लिये हमले होते रहे। मुगलों के दौर में आई राजनैतिक अस्थिरता से कई अफगान लोगों ने भारत की तरफ पलायन किया।

भारत के स्वतत्रंता आन्दोलन और अलग पश्तुन इलाके की आजादी की मांग के दौरान दोनों क्षैत्रो के लोगों ने एक दूसरे के प्रति गहरी सहानुभुति दिखाई। अबुल गफ्फार खान और खान साहिब जैसे लोग भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रीय समर्थक थे।

भारत – अफगानिस्तान के बीच संबंध :–

जनवरी 1950 में भारत – अफगानिस्तान ने पांच साल की मित्रता पर हस्ताक्षर किये, जिसमें दोनों देशों के बीच हमेशा के लिये शांति और सहयोग स्थापित किया। इसी के साथ दोनो के बीच राजनायिक संबंधो की शरूआत भी हो गई। भारत और अफगानिस्तान के बीच पारंपरिक रूप से मजबूत और मैत्रीपुर्ण संबंधों के साथ साथ घनिष्ठ तकनीकी, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध रहे है। भारत और अफगानिस्तान के बीच संबंधों की जानकारी सिंधु घाटी सभ्यता से मिलती है। 1980 के दशक में सोवियत गणराज्य समर्थित डेमोक्रटिक रिपब्लिक ऑफ अफगानिस्तान को मान्यता देने वाला भारत एकमात्र गणतंत्र देश था। हालांकि 1990 में अफगान गृहयुद्ध और तालिबान सरकार के दौरान दोनों देशों के बीच आपसी संबंध प्रभावित हुए थे। अफगानिस्तान में 9/11 के हमलों और अमेरिकी नेतृत्व वाले युद्ध के बाद भारत और अफगानिस्तान के बीच संबंध एक बार फिर मजबूत हुए है।

भारत – अफगानिस्तान के बीच सहयोग के क्षैत्र :–

रक्षा सहयोग :–

भारतीय सैन्य अकादमियों ने अफगानिस्तान के सैन्य अधिकारियो को भारत प्रशिक्षण प्रदान करता है। 2014 में भारत ने अफगानिस्तान और रूस के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। इस समझौते के अनुसार रूस, अफगानिस्तान को आवश्यक सभी सैन्य उपकरण प्रदान करेगा और भारत इसका भुगतान करेगा। भारत ने 2015 में अफगान वायुसेना को तीन रूस निर्मित एम आई 25 फाइटर हेलीकॉप्टर प्रदान किये है।

आर्थिक सहयोग :–

भारत के लिये अफगानिस्तान निर्यात का सबसे बड़ा गन्तव्य है। अफगानिस्तान में कई खनिज जैसे सोना, लोहा, तांबा आदि प्रमुखता से पाये जाते है। भारतीय कम्पनियों ने इनके खनन के लिये निवेश किया है, जिसमें कृषि, संचार, सूचना प्रौधागिकी आदि शामिल है। प्रस्तावित टापी (तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत) पाइपलाइन अफगानिस्तान से होकर गुजरती है। यह तुर्कमेनिस्तान से भारत में प्राकृतिक गैसे के आयात किये जाने के लिये है। भारत, ईरान और अफगानिस्तान ने संयुक्त रूप से एक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किय है। इस सौदे का उद्देश्य चाबहर बंदरगाह में पाकिस्तान को घेरकर अफगानिस्तान के भू – आबद्ध क्षैत्र तक पहुँच बनाने के लिये निवेश करना है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अफगानिस्तान भारत के लिये महत्वपूर्ण क्यों है?

- अफगानिस्तान एशिया के मध्य में स्थित होने के कारण रणनीतिक महत्व रखता है क्योंकि यह एशिया को मध्य एशिया और मध्य एशिया को पश्चिम एशिया में जोड़ता है।
- भारत का सम्पर्क ईरान अजरबेजान, तुर्कमेनिस्तान तथा उज्बेकिस्तान के साथ अफगानिस्तान के माध्यम से होता है। इसलिये अफगानिस्तान भारत के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
- अफगानिस्तान भू – रणनोतिक दृष्टि से भी भारत के लिये महत्वपुर्ण है क्योंकि यह भारत और मध्य एशिया के मध्य में स्थित है जो व्यापार की सुविधा भी प्रदान करता है।
- यह देश रणनीतिक रूप से तेल और गैस से समृद्ध मध्य–पूर्व और मध्य एशिया में स्थित है जो इसे एक महत्वपूर्ण भू–स्थानिक स्थिति प्रदान करता है।
- अफगानिस्तान पाइपलाइन मार्गो के लिये महत्वपूर्ण स्थान बन जाता है। साथ ही अफगानिस्तान कीमती धातुओं और खनिजों जैसे प्राकृतिक संसाधनों से भी सम्द्ध है।

अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण और पुनर्वास में भारत की भूमिका

- भारत ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण और पुनर्वास में महत्वपुर्ण भूमिका निभाई है। भारत ने तकनीकी सहयोग और क्षमता निर्माण के क्षैत्र में महत्वपूर्ण निवेश किया है। अभी तक भारत ने अफगानिस्तान को 3 अरब डॉलर की सहायता प्रदान की है।
- भारत हवाई सम्पर्क, बिजली संयंत्रो के पुनर्निर्माण, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में निवेश के साथ – साथ अफगान सिविल सेवकों और सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित करने के कार्य में मदद करता है।
- भारत ने अफगानिस्तान में डेलारम जिले को ईरान की सीमा से जोड़ने के लिये डेलारम–जरंज राजमार्ग के निर्माण में मदद की है। इससे द्विपक्षीय व्यापार को बढावा मिलेगा।
- भारत ने हरात प्रांत में अफगान– इंडिया फ्रैंडशिप डैम (जिसे पहले सलमा डैम के नाम से जाना जाता था) का निर्माण किया है।
- सद्भावना के संकेत के रूप में भारत ने अफगानिस्तान में नये संसद भवन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- भारत ने 2014 में कंधार में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान और प्रौधोगिकी विश्वविद्यालय (।छौज्न्) की भी स्थापना की है।
- भारत ने अफगानिस्तान में 2,500 मील से अधिक सड़कों का निर्माण किया है।
- भारत ने अफगानिस्तान में 200 से अधिक सार्वजनिक और निजी स्कूलों का निर्माण किया हैं, 1000 से अधिक छात्रों को छात्रवृत्ति दी है। जबकि 16,000 से अधिक अफगान छात्र भारत में अध्ययनरत है।
- कई भारतीय कम्पनियां अफगानिस्तान में पुनर्निर्माण परियोजनाओं में शामिल है।
- हाल ही में भारत ने कुछ महत्वपूर्ण नई परियाजनाओं को लागु करने पर सहमति जताई है, जैसे – काबुल के लिये शहतूत बांध और पेयजल परियोजना, बामयान प्रांत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये बैंड–ए–अमीर सड़क संपर्क, नंगरहार प्रांत में अफगान शरणार्थियों के पुनर्वास के लिये कम लागत वाले आवास और काबुल में एक जिप्सम बोर्ड विनिर्माण संयंत्र आदि।

भारत ने अफगानिस्तान से सांस्कुतिक आदान–प्रदान हेतु जून, 2014 में उदार वीजा नीति की घोषणा की थी, दोनों देशों के बीच 2011 से ही सामरिक भागीदारी समझौता है, 2014 में अफगानिस्तान में राष्ट्रपति पद के चुनाव मं अशरफ गनी अहमदजई नये राष्ट्रपति चुने गये, अशरफ गनी ने अप्रैल, 2015 में भारत की यात्रा की थी, इस यात्रा के दौरान भारत ने अफगानिस्तान को तीन चीतल हेलिकॉप्टर भेंटस्वरूप दिये, इसके अतिरिक्त रक्षा, कृषि, शिक्षा, ऊर्जा, सुरक्षा आदि अनेक मुद्दों पर दोनों नेताओं के बीच महत्वपूर्ण वार्ता हुई ।

25 दिसम्बर, 2015 को भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक उच्चस्तरीय शिष्टमंडल के साथ अफगानिस्तान की यात्रा की, उन्होने अफगानिस्तान के नये संसदीय भवन का उद्घाटन भी किया, अफगान सेना के शहीद जवानों के पांच सौ बच्चों को स्कॉलरशिप की घोषणा की, भारत ने अफगानिस्तान को चार ड्प 25 हेलिकॉप्टर उपहार स्वरूप प्रदान किये, दोनों ही देशों ने ईरान चाबहर पत्तन को अफगानिस्तान से जोड़ने के लिये प्रस्तावित योजना में तेजी लाने पर सहमति जताई।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारत ने अफगानिस्तान में लघु श्रेणी के 92 विकास योजनाओं के निर्माण में सहयोग पर सहमति प्रदर्शित की, वर्तमान में अफगानिस्तान से भारत द्विपक्षीय व्यापार 1 बिलियन डॉलर से भी कम है, अफगानिस्तान, रूस तथा मध्य एशिया तक पहुंचने का सबसे लघु मार्ग प्रदान करता है, अतः अफगानिस्तान से व्यापार की व्यापक संभावनाऐं है, अफगानिस्तान दक्षेश का सदस्य है, भारत ने अफगानिस्तान के साथ 2005 में अधिमान्य व्यापार समझौता किया था।

भारत – अफगानिस्तान संबंधों में चाबहर बंदरगाह की प्रासंगिकता

भारत द्वारा ईरान में बंदरगाह का विकास भारत को एक वैकल्पिक मार्ग का विकल्प प्रदान करता है, बंदरगाह पर लाइ गई वस्तुओं को आसानी से अफगान सीमा तक पहुँचाया जा सकता है तथा जरांज–डेलारम राजमार्ग के माध्यम से अफगानिस्तान के विभिन्न भागों में वितरित किया जा सकता है।

भारत चाबहर बंदरगाह के जरिये मध्य अफगानिस्तान की हाजिगखानो से निष्कर्षित लौह अयस्क का निर्यात कर सकता है, यह अफगानिस्तान के क्षेत्रीय एकीकरण और पाकिस्तान के प्रभाव को कम करने मे सहायक होगा।

नई विकास भागीदारी

रणनीतिक भागीदारी के रूप में द्विपक्षीय विकास सहयोग को मान्यता प्रदान करते हुए तथा अफगानिस्तान में सामाजिक, आर्थिक, अवसंरचना और मानव संसाधन विकास के लिये भारत द्वारा अफगानिस्तान को प्रदान की गई 2 बिलियन यूएस डॉलर की विकास और आर्थिक सहायता के अन्तर्गत क्रियान्वित परियोजनाओं के सकारात्मक प्रभावों को ध्यान में रखते हुए दोनों पक्ष एक महत्वाकांक्षी तथा अग्रदर्शी अगली पीढ़ी की 'नई विकास भागीदारी' आरम्भ करने पर सहमत हुए। इस संदर्भ में, सरकार तथा अफगानिस्तान के लोगों की प्राथमिकताओं और अनुरोध के अनुसार, दोनों पक्ष उच्च प्रभाव वाली 116 समुदाय विकास परियोजनाओं को आरंम्भ करने पर सहमत हुए जिन्हे अफगानिस्तान के 31 प्रांतो में क्रियान्वित किया जायेगा जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सिंचाई, पेयजल, नवीकरणीय ऊर्जा, बाढ़ नियत्रण, सूक्ष्म–जल विद्युत, खेल अवसंरचना और प्रशासनिक अवसंरचना के क्षेत्र भी शामिल है। भारत से सहायतानुदान के अन्तर्गत निम्नलिखित नई परियाजनाओं का क्रियान्वित करने पर सहमति हुई :–

1. काबुल के लिये शहतूत बांध और पेयजल परियोजना जो सिंचाई में सहयोग प्रदान करेगी;
2. पुनर्वास को प्रोत्साहित करने के लिये नानगरहर प्रांत में अफगानिस्तान शरणार्थियों के लौटने के लिये कम लागत पर घरों का निर्माण;
3. बामयान प्रांत में बंद–ए–अमीर तक संड़क संयोजनता जो उद्यान में पर्यटकों की आकर्षित करेगी और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करेगी;
4. परवान प्रांत में चारिकार शहर के लिये जलापूर्ति नेटवर्क;
5. मूल्यवर्धित उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिये काबुल में जिप्सम बोर्ड विनिर्माण संयंत्र की स्थापना, और
6. मजार–ए–शरीफ में पॉलीटेक्नीक का निर्माण।

भारत के लिये चुनौतियाँ

- अफगानिस्तान को सहायता प्रदान करने के भारत के प्रयास भौगोलिक समीपता और सीमित पहुँच के कारण बाधित हो रहे है।
- अफगानिस्तान और पाकिस्तान की मौजूदा सुरक्षा स्थिति में परदे के पीछे से हक्कानी नेटवर्क का हस्तक्षेप जारी है।
- अफगानिस्तान में अलकायदा और ISIS के प्रभाव के कारण बढ़ते आतंकवाद ने भारत के लिये सुरक्षा संबंधी चिंता उत्पन्न कर दी है।
- अफगानिस्तान सबसे अधिक अफीम उत्पादक देशों में से एक रहा है और अफगानिस्तान से ड्रग्स की तस्करी पंजाब के साथ अन्य भारतीय राज्यों में होती है जिससे यूवाओं को प्रभावित करने के साथ– ही– साथ आंतकवाद और संगठित अपराध को भी बढ़ावा दिया है।
- अफगानिस्तान में बढ़ते चीनी प्रभाव मे भारत के लिये कूटनीतिक चुनौती भी पैदा कर दी है।

निष्कर्ष :–

कई चुनौतियों के बावजूद भारत–अफगान संबंध पहले से अधिक मजबूत हुए है। अफगानिस्तान में निरन्तर पुनर्निर्माण और ठोस सामाजिक आर्थिक विकास की भारतीय नीति ने इस युद्धग्रस्त देश में शांति और समृद्धि लाने में मदद की है। भारत, अफगानिस्तान के साथ एक महत्वपूर्ण साझेदारी विकसित करने के लिये उत्सुक है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ :–

1. प्रतियोगिता दर्पण, 2013
2. राजस्थान प्रत्रिका, 2015
3. दैनिक भास्कर, 2015
4. वर्ल्ड फोकस, कलकत्ता
5. गुप्ता, संजु (2012) : इंडिया फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, प्रियर्सन प्रेस।
6. चटर्जी, अनेक (2010) : इंटरनेशनल रिलेशन रिलेशन टुडे, नई दिल्ली, प्रियर्सन प्रेस।
7. पाशा, ए.के. (2014) : इंडिया पॉलिटिकल एण्ड फॉरेन रिलेशन विथ द गल्फ रीजन, नई दिल्ली, विजडम पब्लिकेशन।
8. बेरी, रूचिता (2014) : इंडिया – अफ्रिका, नई दिल्ली, पेटागन प्रेस।

RRIJM 2015, All Rights Reserved